गंगा-पुस्तकमाला का १८६वाँ पुष्प

अंतःपुर का छिद्र

[बौद्धकालीन मौलिक नाटक]

लेखक
गोविंदवल्लभ पंत
(वरमाला, संध्या-प्रदीप, प्रतिमा, मदारी, अंगूर की बेटी, राजमुकुट, जूनिया, नूरजहाँ, यामिनी, नौजवान आदि के रचयिता)

——:※:——

मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार
३६, गौतम बुद्ध-मार्ग
लखनऊ

द्वितीयावृत्ति] सं० २०११ वि० [मूल्य १।)

प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

अन्य प्राप्ति-स्थान—

१. भारती(भाषा)-भवन, ३८१०, चर्खेवालाँ, दिल्ली
२. राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल, मछुआ-टोली, पटना
३. सुधा-प्रकाशन, भारत-आश्रम, राजा बाज़ार, लखनऊ
४. वेस्टर्न बुकडिपो, रेज़िडेंसी रोड, नागपुर १

नोट—इनके अलावा हमारी सब पुस्तकें हिंदुस्थान-भर प्रधान बुकसेलरों के यहाँ मिलती हैं। जिन बुकसेलरों के यहाँ न मिलें, उनका नाम-पता हमें लिखें। हम उनके यहाँ भी मिलने का प्रबंध करेंगे। हिंदी-सेवा में हमारा हाथ बँटाइए।

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

-प्रेमोपहार-

लगभग चौदह वर्ष पहले मैंने यह नाटक लिखा था। इसके अब तक प्रकाशित न हो सकने का कोई विशेष कारण नहीं। गीत इसके सब उन्हीं दिनों मासिक साहित्य में प्रकाशित हो चुके हैं।

उन दिनों साबरमती-आश्रम के संगीताचार्य पं० नारायण-मोरेश्वर खरे महोदय ने कृपा कर इसके गीतों की स्वरलिपि लिख दी थी। इसके प्रकाशन के समय उनके निधन की स्मृति अतीव दुःखमय है।

लखनऊ
वसंत-पंचमी, १९९६

गोविंदवल्लभ पंत

---

१. पात्र

१. अमिताभ	....	...	...	बोधिसत्व
२. उदयन	...	...	...	वत्सराज
३. पद्मावती	...	...	....	राजरानी
४. मागंधिनी	...	...	....	दूसरी रानी

एक मालिन

२. देश

कौशांबी—वत्सराज का राजभवन और समीप का उद्यान।

३. कर्मकाल

प्रत्येक अंक में एक दिन की घटना। इस प्रकार तीन दिन।

ईश-वंदना

[नाटक के साथ पात्र मिलकर ईश-वंदना करते हैं।]

गीत

कल्याण—तीन ताल (विलंबित)

विजय में छिपी पराजय हो ;
दुःख छाया हो, सुखमय हो।

[१]

तुम्हारे संकेतों में नाथ!
निरत हों हाथ, विनत हो माथ,
तुम्हारा ही तम में भय हो,
विजय में छिपी पराजय हो।

[२]

न समझें किसी दृश्य को व्यर्थ,
मिले प्रत्येक शब्द में अर्थ,
अविश्वासों में संशय हो,
विजय में छिपी पराजय हो।

[३]

कर्म-वश होवे चंचल काल,
दिशा का मिट जावे भ्रम-जाल,
बिंदु में विराट का लय हो,
विजय में छिपी पराजय हो।

[४]

तुम्हारे ही बंदी हों प्राण,
हमें आवश्यक हों न प्रमाण।
स्वप्न-जागृति का विनिमय हो,
विजय में छिपी पराजय हो।

प्रथम अंक

प्रथम दृश्य

[स्थान—कौशांबी के राजप्रासाद में महारानी पद्मावती का सुसज्जित कक्ष । समय—रात्रि, सामने प्रज्वलित दीपक । अकेली पद्मावती ।]

पद्मावती

वह कभी हमारे द्वार पर भिक्षा के लिये नहीं आया ; मैं उसकी काषाय झोली रत्नों से भारी कर देती। नित्य उसे देखना चाहती हूँ, पर ऐसा नहीं होता। उस उज्ज्वल मुख और मेरी तृषित आँखों के बीच में हे राज-मंदिर के प्रस्तर-खंड ! तू ही बाधा है। आर्यपुत्र के प्रति कोई भी विश्वासघात मेरे मन में न हो। क्या ये पत्थर की दीवारें अबला को बंदी करने के लिये हैं ? नहीं, उधर से ऋतु की तीक्ष्णता और इधर से हमारे रत्नहार की द्युति अपना देश न परिवर्तित करें, यही एकमात्र उद्देश्य है। इसी कटार का उपयोग करूँगी। [दीवार पर टँगी कटार उतार लेती है।] वह राजपथ का यात्री अमिताभ बोधिसत्व है। [कुछ क्षण विचार-मग्न होकर] इस शून्य, एकांत रात्रि में प्रियतम का विरह है। मेरी नींद, नींद के

स्वप्न, सभी इस परदे में छिद्र कर देने में नियुक्त हों। इस कटार की धार और मेरी प्रबल इच्छा का मेल मेरे दुर्बल हाथों से हो। दाहने हाथ के थकने पर बायाँ विश्राम पा चुकेगा, ये इसीलिये दो हैं। मैं श्रांति का अनुभव ही न करूँगी, राजपथ ! तेरे लिये, राजपथ के पथिक ! तुझे देखने के लिये। [कटार से धीरे-धीरे दीवार की ईंट कुरेदना आरंभ करती है। अचानक हाथ रोक देती है।] नहीं, इस धीर गति से तो न-जाने कितने जन्म बीत जायँगे, तब भी उसके दर्शन दुर्लभ ही रहेंगे। मैंने क्यों यह निशा का समय चुना, क्यों ऐसा मंद्र स्वर स्थिर किया ? जो मेरा संकोच है, वही मेरा भय। [नेपथ्य में आहट सुन, डरकर कटार पीठ की ओर छिपाती है।] निश्चय मनुष्य की ही आहट है। इसी ओर कोई आता है। कटार आसन के नीचे छिपा देती है। खोदी हुई ईंट के सामने महाराज उदयन का चित्र रख देती और वीणा छेड़कर गाने लगती है।]

गीत

हमीर—तीन ताल

फिर न मिलेगा प्राण ?
विरल विजन की तरु-छाया में,
लिए हुए अनुपम छवि-गान,
फिर न मिलेगा प्राण ?

(१)

कब तक स्मृति में पाऊँ जीवन,
कब तक स्वप्नों का आलिंगन,
कब तक बैठे शून्य सदन में
माला जपूँ, करूँ मैं ध्यान ?
फिर न मिलेगा प्राण ?

(२)

मेरे गृह में तजकर जग को,
मेरे प्रमुख भूलकर मग को,
ओट त्याग मेरी आँखों में,
मेरे अंतर में तज मान।
फिर न मिलेगा प्राण ?

(३)

कठिन मृत्यु के अगणित साधन,
लघुतम एक हमारा जीवन,
किसे ज्ञात किस विरह-रात में,
दीपक का होगा निर्वाण ?
फिर न मिलेगा प्राण ?

(४)

विषम प्रतीक्षा की जागृति में,
अविश्वास की अविचल स्मृति में,
बार-बार ही निष्फल होगा

अश्रु-सिक्त, आकुल आह्वान ।
फिर न मिलेगा प्राण !

[गीत समाप्त कर वीणा रख देती है ।] कोई भी नहीं है, यह साधना का शत्रु भ्रम ही है । आहट और भय, ये दोनों मेरे मन में उत्पन्न हुए । मैं किसी से क्यों डरूँगी ? मेरे मन में कोई भी इच्छा न हो । [छिपी हुई कटार फिर हाथ में लेती है । मागंधिनी का प्रवेश । पद्मावती चौंककर कटार छिपाना चाहती है, पर वह हाथ से छूटकर भूमि पर गिर जाती है ।] यहीं छिपी खड़ी थी मागंधिनी ! तुम मेरा रहस्य समझने के लिये क्यों इतनी आकुल हुईं ? नहीं, मैं आत्महत्या करना नहीं चाहती थीं ।

मागंधिनी

तुम्हें ऐसा करने की आवश्यकता ही क्या ? स्वामी के मृदु संबोधनों का उत्तर मैं नहीं दे पाती । लाओ, यह कटार मुझे दो ।

[मागंधिनी भूमि पर पड़ी कटार उठाना चाहती है । पद्मावती उस पर अपना पैर रख देती और स्वयं उठा लेती है ।]

पद्मावती

नहीं, मैं न दूँगी । तुम्हारे रुधिर से भरा मेरा कक्ष और मेरी कटार मेरे शत्रु किस दृष्टि से देखेंगे, महाराज क्या विचार करेंगे ? इन सबके ऊपर इस राक्षसी स्मृति को लेकर मैं कैसे इस कक्ष में अपना जीवन व्यतीत करूँगी ?

मागंधिनी

अच्छा, तो जाने भी दो, किसी दूसरे मुहूर्त में मृत्यु का भय छोड़ूँगी। [आग्रह-पूर्वक पद्मावती का हाथ थाँमकर] सच कहना बहन! तुम्हारे हाथ में इस समय यह कटार किसलिये ?

पद्मावती

तुम फिर भी पूछती हो किसलिये ? तुमने तो छिपकर सब कुछ देख लिया ?

मागंधिनी

मैं महान् आश्चर्य और शंका में पड़ गई हूँ। यह समरांगण की नर्तकी राजमहल के भीतर राजरानी को कौन-सा संगीत सुना रही है ?

पद्मावती

अधिक सोचने का अवसर ही तुम्हें न दूँगी। [उदयन का चित्र हटाकर उसके पहले स्थान पर रख देती है।] देखो, यही स्पष्ट है।

मागंधिनी

[साश्चर्य] यह क्या। तुमने दीवार की ईंट खोद डाली है ?

पद्मावती

इसी कटार की सहायता से। इस प्राचीर में छि
चाहती हूँ।

अश्रु-सिक्त, आकुल आह्वान ।
फिर न मिलेगा प्राण ?

[गीत समाप्त कर वीणा रख देती है ।] कोई भी नहीं है, यह साधना का शत्रु भ्रम ही है । आहट और भय, ये दोनों मेरे मन में उत्पन्न हुए । मैं किसी से क्यों डरूँगी ? मेरे मन में कोई भी इच्छा न हो । [छिपी हुई कटार फिर हाथ में लेती है । मागंधिनी का प्रवेश । पद्मावती चौंककर कटार छिपाना चाहती है, पर वह हाथ से छूटकर भूमि पर गिर जाती है ।] यहीं छिपी खड़ी थी मागंधिनी ! तुम मेरा रहस्य समझने के लिये क्यों इतनी आकुल हुईं ? नहीं, मैं आत्महत्या करना नहीं चाहती थीं ।

मागंधिनी

तुम्हें ऐसा करने की आवश्यकता ही क्या ? स्वामी के मृदु संबोधनों का उत्तर मैं नहीं दे पाती । लाओ, यह कटार मुझे दो ।

[मागंधिनी भूमि पर पड़ी कटार उठाना चाहती है । पद्मावती उस पर अपना पैर रख देती और स्वयं उठा लेती है ।]

पद्मावती

नहीं, मैं न दूँगी । तुम्हारे रुधिर से भरा मेरा कक्ष और मेरी कटार मेरे शत्रु किस दृष्टि से देखेंगे, महाराज क्या विचार करेंगे ? इन सबके ऊपर इस राक्षसी स्मृति को लेकर मैं कैसे इस कक्ष में अपना जीवन व्यतीत करूँगी ?

मागंधिनी

अच्छा, तो जाने भी दो, किसी दूसरे मुहूर्त में मृत्यु का भय छोड़ूँगी। [आग्रह-पूर्वक पद्मावती का हाथ थाँमकर] सच कहना बहन! तुम्हारे हाथ में इस समय यह कटार किसलिये ?

पद्मावती

तुम फिर भी पूछती हो किसलिये ? तुमने तो छिपकर सब कुछ देख लिया ?

मागंधिनी

मैं महान् आश्चर्य और शंका में पड़ गई हूँ। यह समरांगण की नर्तकी राजमहल के भीतर राजरानी को कौन-सा संगीत सुना रही है ?

पद्मावती

अधिक सोचने का अवसर ही तुम्हें न दूँगी। [उदयन का चित्र हटाकर उसके पहले स्थान पर रख देती है।] देखो, यही स्पष्ट है।

मागंधिनी

[साश्चर्य] यह क्या। तुमने दीवार की ईंट खोद डाली है ?

पद्मावती

इसी कटार की सहायता से। इस प्राचीर में छिद्र करना चाहती हूँ।

मागंधिनी

छिद्र ? राजरानी के कक्ष में छिद्र ! महाराज देखेंगे, तो क्या कहेंगे ?

पद्मावती

वह न देख सकेंगे। मैंने इसके आगे उनका ही चित्र रख दिया है।

मागंधिनी

मैं क्या कहूँ ?

पद्मावती

तुम भी कुछ मत कहो। इस छिद्र में कोई भी दुरभिसंधि छिपी नहीं है। यह संध्या-समय विहार को लौटते हुए अमिताभ बोधिसत्व के दर्शन के लिये है।

मागंधिनी

बोधिसत्व ? कौन अमिताभ बोधिसत्व ?

पद्मावती

वही, जिसके शुभागमन से कौशांबी भी दिन-दिन शांति का सदन बनती जा रही है। अमिताभ बोधिसत्व—वही कपिल-वस्तु का राजकुमार सिद्धार्थ, जिसने विशुद्ध ज्ञान प्राप्त किया है, सृष्टि-संहार का तत्त्व समझा है। एक ईंट ले आती हूँ।

[पद्मावती का प्रस्थान।]

मागंधिनी

राजकुमार सिद्धार्थ ? यह तो उसी संन्यासी का नाम है।

इसने मेरे साथ विवाह करना अस्वीकार कर मेरे पिता की आशाएँ चूर-चूर की थीं। पुत्र-हीन पिता का अपमान पितृहीन पुत्री से न भूला जा सके, और इस सिद्धार्थ ही का नाम प्रतिहिंसा हो।

[पद्मावती ईंट लेकर आती है, और उससे कटार की मूँठ में हलकी-हलकी चोटें चलाकर दीवार की ईंट काटती है।]

पद्मावती

तुमने कभी उस शांत और स्थिर मूर्ति के दर्शन किए हैं क्या ? सुमधुर मुख ! उस पर निशा और प्रभात का प्रभाव ही नहीं। ज्वार-भाटा-हीन समुद्र ! वह जितना सम है, उतना ही गंभीर। तुमने कभी बोधिसत्व को देखा भी है बहन ?

मागंधिनी

उस दिन राजसभा में काशी से एक कुलपति पधारे थे। उन्होंने इसे भंड तपस्वी सिद्ध किया। क्या तुमने यह सब नहीं सुना ?

पद्मावती

नहीं, मेरे कान इन शब्दों के लिये बहरे हो जायँ।

मागंधिनी

[विरक्त होकर] तुम जो भी चाहो, पर मेरी इच्छा है, यह छिद्र की बात मुझे भी ज्ञात न रहे। तुम मुझे भूल गई समझना, जब मैं इस कक्ष में प्रवेश करूँ, तो महाराज का

चित्र छिद्र के आगे ही रहे। इस समय वह दूर है, मैं चली जाती हूँ। [जाने लगती है।]

पद्मावती

[ईंट खोदते-खोदते] सुनो, ठहरो।

मागंधिनी

[जाते जाते] अभी कुछ देर में आती हूँ। [चली जाती है।]

पद्मावती

अब तुम आज न आओगी। मैं यही चाहती भी थी। तुम मेरे रहस्य में प्रविष्ट न हुईं, यह अच्छा ही हुआ। [द्वार के समीप जाती है।] मैं पहले द्वार बंद करना भूल गई थी; इस बार शृंखला का भी उपयोग करूँगी, वह है किस-लिये ?

[द्वार बंद कर उसके ऊपर शृंखला चढ़ा देती है। दीपाधार को छिद्र के समीप रखती है। कटार की नोक से दीप-शिखा को अधिक उज्ज्वल कर अंत में फिर ईंट खोदना प्रारंभ करती है।]

अगला परदा गिरता है।

द्वितीय दृश्य

[स्थान—वत्सराज उदयन के महल का प्रांगण। समय—वही रात्रि, चाँदनी खिली हुई है। मागंधिनी का गाते हुए प्रवेश।]

गीत

भैरवी—एक ताल [द्रुत]

चंद्र-किरण-चुंबिता, प्रफुल्ल शरद-यामिनी,
कौन विजन में बजा रहा वियोग-रागिनी ?

(१)

आशा के गूँथ हार मुक्त किए सदन-द्वार,
निरख पांथ हुई श्रांत कब की अनुरागिनी।

(२)

सस्मित मुख, विस्मित मन, शून्य नयन, विवसन तन,
छाया - अनुगामिनी, हुई हूँ उन्मादिनी ।

मागंधिनी

[गीत समाप्त कर] इस निर्धन की कन्या को वत्सराज के भवन में स्थान इसीलिये मिला कि रूप की पहली हार भूल सकूँ। पद्मावती ! तुम न भूलने दोगी। इस संन्यासी से जितनी दूर जाना चाहती हूँ, यह उतना ही निकट खड़ा दिखाई

देता है। वह दीवार में छिद्र कर उसे राजभवन के भीतर भी लाना चाहती है। यही छिद्र लक्ष्य-विंदु हो। सिद्धार्थ के साथ वहाँ पद्मावती भी है। प्रियतम के प्रेम का उत्तम और अधिक अंश क्या इसने मुझसे नहीं छीन रक्खा है? तब क्यों न एक ही उपाय से ये दोनो बाधाएँ दूर हों। कौन? [मालिन फूल की डलिया लेकर आती है।] मालिन! पद्मावती के महल से आती है?

मालिन

हाँ, फूल देकर। राजरानी के सबसे प्रिय फूल इसी रात में खिलते हैं।

मागंधिनी

यह रिक्त डलिया सब कुछ कह चुकी है। तू मेरा कभी एक काम न करेगी?

मालिन

क्यों नहीं। वे क्षण सुमधुर होंगे।

मागंधिनी

पुष्प-वन में रहते-रहते बड़ी मनोहर हो गई तू, चतुर उससे भी अधिक!

मालिन

सेविका को क्या आज्ञा है?

मागंधिनी

क्या तू पुष्पों के बदले तारिकाएँ भी चुनकर ला सकती

है ? इस बार वसंतोत्सव के अवसर पर मैं उन्हीं के हार गूँथना चाहती हूँ। उन्हीं से भगवान् मन्मथ की पूजा करूँगी।

मालिन

हरे वृक्ष की सर्वोच्च डाली के सबसे ऊपर खिलनेवाले फूल को, अपने प्राणों का भय त्यागकर भी, ला सकूँगी; पर इस अनंत और नीले आकाश के लिये मैं कटे पंख की चिड़िया हूँ।

मागंधिनी

तो चुप रहकर अभिमान छोड़ दे। तुझे भी विलंब हो रहा होगा। फिर कभी कुछ कहूँगी, इस समय हम विलग हों।

[एक ओर से मालिन, दूसरी ओर से
मागंधिनी का प्रस्थान।]

यवनिका-पतन

द्वितीय अंक

प्रथम दृश्य

[स्थान—उदयन का विलास-भवन। समय—संध्या से पूर्व। वीणा लिए एकाकी उदयन।]

उदयन

जो कार्य भाषा से नहीं हुआ, जिस भाव को उच्चारण न समझा सका, उसे कुछ व्यक्त करने, कुछ छिपा देने के लिये ही क्या गीत का जन्म हुआ? दिखाई दो स्वर! हम तुम्हें किसी देश में बंदी कर अनंत काल के साथ युद्ध करेंगे।

[वीणा झंकरित कर गाते हैं।]

गीत

दरबारी कानड़ा—तीन ताल

कौन छिपे तुम तम में प्यारे!
मंजु, मनोहर वेश सँवारे?

(१)

रवि थल में शतदल विकसावे,
तम नभ में तारिका खिलावे,
छाया-किरणों की जाली में
तुम्हें खोज हारे।

[पद्मावती धीरे-धीरे हार गूँथती हुई आकर ओट में खड़ी हो जाती है। महाराज गाते ही रहते हैं। पद्मावती अपने पैर से पृथ्वी पर ताल देना आरंभ करती है।]

(२)

चपला थिरक रही चंचल-मति,
नृत्यशील मन-मोर मृदुल-गति,
उठ री ! प्रलय-बयार सिंधु में,
खोलो नौका रे।

उदयन

[गीत समाप्त कर] तुम बड़ी देर से मेरे अलक्ष्य में खड़ी हो पद्मावती ! सम्मुख आओ कि यह गीत अधिक मधुर हो जाय।

[हार गूँथती हुई पद्मावती सामने आती और आकर वाम पार्श्व मे खड़ी हो जाती है।]

पद्मावती

महाराज कैसे कहते हैं कि मैं बड़ी देर से खड़ी हूँ ?

उदयन

एक चरण उतनी ही देर से पृथ्वी में ताल देकर मेरे गीत को थाँभे हुए था।

पद्मावती

[उसी प्रकार] वह चरण मेरा ही था, इसका विश्वास किस तरह हुआ ?

उदयन

तुम्हारे नूपुरों द्वारा। उनकी झंकार-माधुरी मेरे सबसे प्रिय गीत के साथ मिलकर स्मृति-मंदिर में हर समय उपस्थित रहती है। मैं आँखों से इसका रूप देखकर भी इसे जान सकता हूँ, कानों से इसके स्वर सुनकर पहचानना तो स्वाभाविक ही है। कोई भी छद्म-वेश इसे विदेशी नहीं बना सकता। [नेपथ्य की ओर देखकर] मागंधिनी इसी ओर आती है। आओ, आओ मागंधिनी! तुम भी आओ।

[दक्षिण पार्श्व से मुस्किराती हुई मागंधिनी आकर दाहनी ओर खड़ी हो जाती है।]

मागंधिनी

राजरानी पद्मावती को यदि कोई बाधा प्रतीत न हो, तो स्वामी की इच्छा पूर्ण हो।

पद्मावती

मेरा उल्लेख न करो बहन! स्वामी की इच्छा और उसकी पूर्णता के बीच में मेरा कुछ भी अस्तित्व न हो। [हार में एक पुष्प गूँथकर दूसरे पुष्प के लिये अंचल में हाथ डालती है। पुष्प नहीं मिलता।]

उदयन

एक वाम पार्श्व में, दूसरी दाहनी ओर। तुम दोनो इसी प्रकार खड़ी रहो, जिससे इन दोनो पक्षों के बीच

में मेरा गीत अज्ञात, अनंत की दिशा में उड़ता ही चला जाय।

पद्मावती

पर मुझे क्षमा मिले महाराज ! मेरे अंचल के सभी पुष्प समाप्त हो गए। मैंने कुछ फूल और रख छोड़े हैं, उन्हें भी इस हार में गूँथना चाहती हूँ। मेरे रिक्त स्थान की पूर्ति कल्पना करेगी। वत्सराज की आज्ञा हो, मैं जाऊँगी। [जाती है।]

मागंधिनी

मेरे ही आने से पद्मावती चली गई। वह महाराज के प्रेम में मेरा अधिकार नहीं देख सकती। उसके द्वारा महाराज की ऐसी अवज्ञा मुझे भी सहन न हो।

उदयन

जाने भी दो, क्या वह तुमसे ईर्ष्या रखती है ?

मागंधिनी

पूछना ही क्या है, स्वाभाविक है।

उदयन

ईर्ष्या ही हमारी प्रकृति है, यही क्यों मान लिया जाय ? हमें दूसरे के स्वभाव का ज्ञान प्राप्त करने के लिये अपने अभ्यास को भूल ही जाना चाहिए। पद्मावती तुमसे ईर्ष्या नहीं रखती, मैं साक्षी हूँ। उसने तुम्हारे परोक्ष में मुझसे तुम्हारे लिये प्रार्थना की है।

मागंधिनी

उसमें निश्चय ही कोई-न-कोई ग्रंथि होगी।

उदयन

मैं मानने को प्रस्तुत नहीं।

मागंधिनी

तो मैं भी कहूँगी कि कौशांबी का विजेता नारी के सम्मुख पराजित है।

उदयन

क्या ? क्या ? तुमने कौशांबी-विजय की स्मृति जागरित कर यह किस हार की कथा सुनाई ? कहो, कहो, हमारी हार के वर्णन से हमारी विजय का दर्प दलित हो।

मागंधिनी

मैं बहुत कुछ सहन करती हूँ महाराज ! पद्मावती की वंकिम गति यदि आपके प्रेम-पथ पर न होती, तो मागंधिनी उस पर दृष्टिपात भी न करती। किंतु मैं किस प्रकार कहूँ ?

[चुप हो जाती है।]

उदयन

कहो, कहो।

मागंधिनी

नहीं, राजन् ! न कहूँगी। अपना अस्तित्व सभी को प्रिय है। इस पर पद्मावती आपको अपने प्राणों से भी प्यारी है।

उदयन

कदाचित् यह सत्य नहीं। तुम्हें अभय प्राप्त हो, कहो।

मागंधिनी

वह आपके गौरव को आघात पहुँचाने के लिये अग्रसर हो रही है।

उदयन

कौन ?

मागंधिनी

पद्मावती, राजन् ! पद्मावती।

उदयन

चुप रहो मागंधिनी ! तुम्हारा अनुभव भ्रम से भरा है। मेरे इस मधुर गीत में तुम्हारे ये सभी स्वर विवादी हैं। [वीणा छेड़ते हैं।]

मागंधिनी

यथार्थ है राजन् ! क्योंकि इसकी टेक बार-बार आपकी स्तुति से नहीं दुहराई जा सकती। मैं उस रहस्य को निगल भी सकती हूँ। वह विष खाकर जीती भी रह सकूँगी।

उदयन

[साश्चर्य] रहस्य और विष ? [वीणा दूर रखते हैं।]

मागंधिनी

हाँ, बल्कि दोनो मिलकर विषाक्त रहस्य !

उदयन

[आसन से उठकर मागंधिनी की ओर बढ़ते हैं।] कहाँ ?

मागंधिनी

राजरानी पद्मावती के कक्ष में।

उदयन

तुमने अपनी आँखों से देखा ?

मागंधिनी

हाँ, मैं उसे सूर्य के आलोक में दिखा भी सकती हूँ।

उदयन

मुझे भी।

मागंधिनी

हाँ, महाराज, केवल आप ही को तो, नित्य संध्या-समय।

उदयन

मेरा धैर्य छूट गया है। आज ही दिखा सकती हो ? अभी समझा सकती हो ?

मागंधिनी

[गवाक्ष से आकाश और पृथ्वी को देखकर] छाया यद्यपि बढ़ चली है, फिर भी संध्या होने में कुछ विलंब ही है। चलिए, कदाचित् कुछ दिखा सकूँ।

उदयन

चलो।

मागंधिनी

आप चुपचाप मेरा अनुसरण करें। [कुछ बढ़कर पीछे को मुड़ती हुई।] किंतु एक बात है।

उदयन

क्या ?

मागंधिनी

यह सब आपको पद्मावती से गुप्त ही रखना होगा।

उदयन

पद्मावती से छिपाकर कहाँ रख सकूँगा ? मागंधिनी !

मागंधिनी

तो इस रहस्य को देखने की आशा भी व्यर्थ ही है राजन् ! अपने हृदय-मंदिर में मुझे कहीं स्थान दो, मैं उसमें इस रहस्य को रक्षित रक्खूँगी। अब मैं महाराज से शपथ लेकर ही आगे बढ़ूँगी।

उदयन

तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ, यह सब कुछ पद्मावती से छिपाकर ही रक्खूँगा।

मागंधिनी

एक बात और।

उदयन

उसे भी सुनूँगा।

मागंधिनी

यह सब कुछ आपको छिपकर ही देखना होगा।

उदयन

अंधकार में ? ..... यही हो।

[मागंधिनी आगे-आगे जाती है। उदयन उसका अनुसरण करते हैं।]

दृश्य-परिवर्तन

द्वितीय दृश्य

[स्थान--पद्मावती का कक्ष । समय--वही संध्या । उदयन के विलास-कक्ष से आकर पद्मावती अकेली बैठी वह हार गूँथ ही रही है । उदयन का चित्र छिद्र के आगे है ।]

पद्मावती

तुम हरे आकाश में खिलनेवाले नक्षत्र हो पुष्प ! मर्त्यलोक में आने से ही तुम्हारा जीवन इतना छोटा है । [उदयन का चित्र छिद्र के सामने से हटा देती है ।] इसके पीछे छिपा हुआ यह प्राचीर का छिद्र दिखाई देता है और हरे वृक्षों की दूरी में विलीन राजपथ । इसी से नित्य नियम-पूर्वक अमिताभ अपने विहार जाता है । ग्रीष्म और शिशिर का कोप उसके पथ में खड़ा नहीं होता, वसंत और शरद् का हास उसे उत्तेजना नहीं देता । संध्या होने को है, उसके आने का समय निकट है । [छिद्र से बाहर देखती है । ग्रंथि देकर हार पूर्ण करती और छिद्र के समीपवर्ती चित्र को पहना देती है ।] प्राणनाथ के विरह में जब मैं उनका चित्र देखती हूँ, तो उस विदेशी चित्रकार का कौशल दिखाई देता है । [छिद्र से राजपथ देखती है ।] नहीं; वह अभी नहीं आया ।

उसकी आहट भी नहीं सुनी, उसके आने का समय ही नहीं हुआ, तो मेरे मन में क्यों यह विश्वास बढ़ा कि वह आ गया। इसे विश्वास न कहूँगी, किसी और की आहट है! [घबराकर चित्र छिद्र के समीप रख देती है।] मेरे मन में बार-बार यह भय का उदय कैसा? मेरा मन वर्षा के बाद खिलनेवाले कमल की तरह स्वच्छ हो, उसमें आकांक्षा का कोई भी कण न हो, मैं किसी से क्यों डरूँगी? जो छिद्र के इस ओर है, वही उस ओर भी। [चित्र हटाकर फिर राजपथ देखती है। उसे न पाकर उदास होती है।] अब भी नहीं आया। जब वह ठीक समय से आता है, तो मैं ही क्यों कुसमय में उसकी आशा करूँ? मेरे प्रेम में इतना घनत्व नहीं कि उसका नियम टूट जाय। मेरा अधैर्य खिलकर प्रतीक्षा बन जाता है, इस प्रतीक्षा का फल ही विरह है। यह मेरा ही दोष है, इसका मैं ही भोग करूँगी।

[छिद्र से एकटक राजपथ की ओर देखती रहती है।]

अगला परदा गिरता है।

तृतीय दृश्य

[स्थान—पद्मावती के कक्ष का बाह्य देश ।
समय—वही संध्या । मागंधिनी का अनुसरण करते
हुए उदयन का प्रवेश ।]

मागंधिनी

इसी रंध्र से पद्मावती का कक्ष दिखाई देता है । [स्वयं रंध्र से देखती है ।] हम प्रायः ठीक समय पर आए । देखिए राजन ! इस समय आपकी प्रिया क्या कर रही हैं ? यहीं से मैंने इन्हें इसी प्रकार कई बार देखा ।

उदयन

वह हार ही गूँथ रही होगी । ऐसा ही कहकर उसने जाने की आज्ञा माँगी थी । मैंने उसकी वाणी और कर्म में कभी अंतर नहीं पाया । [रंध्र से पद्मावती के कक्ष में देखते हैं ।] वही अर्द्धग्रथित पुष्पहार उसके हाथ में है । उसका गूँथना छोड़कर वह किसी गहरी एकाग्रता में लीन है । मुखाकृति से विचार स्थिर प्रतीत होता है । प्राचीर में एक छिद्र हो गया है । उसी से बाहर कुछ देख रही है ।

मागंधिनी

छिद्र हो नहीं गया है महाराज ? किया गया है ।

उदयन

तो इसमें भी क्या रहस्य छिप सकता है ? कक्ष के कृत्रिम सौंदर्य से अकुलाकर यदि कोई नेत्र बाहर देखना चाहते हैं, तो वे सतत परिवर्तनशील प्रकृति को देखें। वहाँ गवाक्ष भी बन सकता है।

मागंधिनी

किंतु महाराज भूलते हैं, वहीं राजपथ है। उसमें साधु और चोर, सिंह और गाय, सभी चलते हैं।

उदयन

उन्हें देखने का अधिकार भी नेत्रधारी-मात्र को हो।

मागंधिनी

मुझे इससे द्वेष नहीं। पर यदि राजपथ के किसी पथिक की कुदृष्टि का इस छिद्र से राजमहल के भीतर स्वागत हो, तो ?

उदयन

[साश्चर्य] तुम्हारा क्या अर्थ है मागंधिनी ! तुम्हें पद्मावती के निर्मल चरित्र में शंका हो गई है। तुम उस कालिमा को मेरे हृदय-पट पर भी फैला देना चाहती हो ? यहीं पहली बार सुनता हूँ।

मागंधिनी

[उदयन के चरणों पर सिर रखकर] पर अपने स्वार्थ के लिये नहीं, स्वामी के मंगल के लिये।

उदयन

कुछ समझ में नहीं आता। स्पष्ट कहो। पद्मावती क्यों इस छिद्र के बाहर देख रही है ?

मागंधिनी

प्रकृति को देखने के लिये नहीं, राजपथ पर चलनेवाले किसी विशेष व्यक्ति को देखने के लिये। [उठ जाती है।]

उदयन

कहती जाओ, वह राजपथ का पथिक कौन है ? मैं तुम्हारी बात का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलने तक यद्यपि विश्वास न करूँगा, फिर भी सुनना चाहता हूँ, वह विशेष व्यक्ति कौन है ?

मागंधिनी

उसकी चर्चा बहुधा आपकी राजसभा में छिड़ जाती है। वह कपिलवस्तु का राजकुमार सिद्धार्थ है, जो सत्य-प्राप्ति की घोषणा करते हुए आपके नगर में आया है। क्या आपकी सभा में अधिक बार यह सिद्ध नहीं हुआ कि अपने को अमिताभ बोधिसत्व कहनेवाला एक पाखंडी है, चरित्र-भ्रष्ट है।

उदयन

कुछ निश्चय नहीं कहा जा सकता। पद्मावती ने उन्हें राजभवन में आमंत्रित कर उनके उपदेश सुनने की अभिलाषा प्रकट की है। मैंने भी अनेक बार उस वीतराग तपस्वी के दर्शन किए हैं। उसका वह प्रभामय मुखमंडल कलंक-हीन है, उसे देखकर कलंकित होने का डर ही नहीं।

मागंधिनी

तो यह दावानल की तरह बढ़ती हुई उसकी अपयश-चर्चा तृणवत् है, निर्मूल है ?

उदयन

नहीं, उसका कारण अधिकांश में वे लोग हैं, जिनके मान-संभ्रम को बोधिसत्व के उपदेशों से आघात पहुँचा है। यह उन्हीं की चीत्कार है। वे नाना प्रकार के षड्यंत्रों द्वारा उसे भ्रष्ट और नास्तिक सिद्ध करना चाहते हैं। प्रत्येक बार उन्हीं की हार होती है।

मागंधिनी

ठीक है राजन्! यह मेरी ही भूल है, मैं आज से मूक ही रहूँगी।

उदयन

मैं फिर देखता हूँ। [छिद्र से पद्मावती के कक्ष में देखता है।] मागंधिनी! तुम इसी पद्मावती को कलंक लगा रही हो ? देखो, देखो, तुम भी देखो; वह किसी प्रेम-भरी दृष्टि से मेरे चित्र की ओर देख रही है। उसके मुख-मंडल पर कैसा विशुद्ध प्रेम झलक रहा है।

मागंधिनी

ठीक है राजन्! छिद्र भी तो उसी चित्र की ओट में छिपा हुआ है।

उदयन

चुप ही रहो मागंधिनी ! मैंने विचार-पूर्वक तुम्हारी बात सुनी, तुम भी विचारकर ही इस संबंध में कुछ और कहो। चलो, यह संध्या का सुहावना समय वृथा शंका से कलुषित न करें। आओ, मैं वीणा झंकारित करूँगा, तुम कोकिला-कंठ से सुधा बरसाओगी। गीत दुर्भाव नष्ट करे।

मागंधिनी

जैसी आज्ञा।

[दोनों का प्रस्थान।]

यवनिका-पतन

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

[स्थान--राजभवन का निकटवर्ती उद्यान।
समय--प्रभात का प्रथम प्रहर। मागंधिनी फूल की
डलिया लेकर आती है।]

मागंधिनी

वत्सराज कुछ भी कहें, पर उनके मन में संशय-बीज पड़ चुका है। वह अंकुरित हो जाय। क्या मेरी तिरस्कृत आँखें अविराम धारा न बहा सकेंगी? मैं रक्त के आँसू बहाकर भी इसे सींचूँगी। मेरे दोनो हाथों की छत्रच्छाया इसे तुषार से रक्षित करे। यह डलिया मालिन को देने आई हूँ, वही मेरा काम करेगी।

[मालिन आती है।]

मालिन

भगवती की जय हो!

मागंधिनी

तू निश्चय ही मेरी सहायता करेगी।

मालिन

राजरानी के आगमन से यह पुष्प-राशि अधिक कांतिमय हो गई है, मैं भी कृतार्थ हुई हूँ। पधारिए, महारानी, इधर

पधारिए। स्फटिक-सरोवर में रक्त कमल खिल गए हैं। यह डलिया मुझे दीजिए, मैं इसे नव-मल्लिका से परिपूर्ण कर आपके लिये पद्म-मृणाल की माला गूँथूँगी।

मागंधिनी

मेरे हृदय में पद्म-माला का भार सहन करने की शक्ति तो है, किंतु स्थान नहीं। देख, मैंने आज एक नवीन रत्नहार धारण किया है। [हार दिखलाती है।] पाटलिपुत्र के सबसे चतुर शिल्पी ने बड़े परिश्रम से इसमें पुष्पों को निर्मित किया है। गंध और कोमलता छोड़कर ये पुष्प तेरी वल्लरियों में खिलनेवालों के अनुरूप ही हैं। देख, देख, सच्चे शिल्पी ने कितनी स्पष्ट कल्पना की है। यह हमें नित्य ही न गूँथना पड़ेगा। इसका दीर्घ जीवन ही इसकी विशेषता है, उसी का मूल्य है मालिन! क्या तू कभी उपवन में पुष्प-चयन करते-करते थक नहीं जाती, किसी छाया में विश्राम नहीं लेती? क्या उस समय ऐसा ही हार पहनने की इच्छा नहीं करती?

मालिन

क्यों नहीं? पर इच्छाएँ किसकी तृप्त हुईं?

मागंधिनी

जिस हरित पल्लव-पुंज के ऊपर पुष्प खिलते हैं, क्या तूने उसके नीचे के अंधकार में सर्प नहीं पाल रक्खे हैं?

मालिन

सर्प? राजरानी! यहाँ सर्पों की क्या आवश्यकता?

हमने कँटीले वृक्ष और लताओं को भी यहाँ से निर्वासित किया है।

मागंधिनी

किंतु कई सुंदर पुष्प तो काँटों ही में खिलते हैं। क्या सर्प के भी मस्तक में मणि नहीं रहती? तुमने यहाँ सर्प नहीं पाल रक्खे हैं? क्या उन्हें इस उपवन में प्रवेश करने की आज्ञा भी नहीं? क्या वे इस आज्ञा का पालन भी करते हैं?

मालिन

उन्हें कौन रोक सकता है? वे कभी-कभी दिखाई देते हैं। हम उन्हें अपना प्रबल शत्रु समझकर उसी समय उनका सिर कुचल देती हैं।

मागंधिनी

क्या तेरे कानों में बोधिसत्व की अहिंसा के उपदेश नहीं पड़े? किंतु अब जो सर्प दिखाई दे, उसे मारना मत। किसी प्रकार पकड़कर रखना, मुझे उसकी आवश्यकता है।

मालिन

कब?

मागंधिनी

आज ही सही।

मालिन

आज ही! इतने शीघ्र, किसलिये राजरानी!

मागंधिनी

[व्यंग्य-पूर्वक] गले में डालकर नृत्य करने के लिये। [गंभीर होकर] राजरानी से यह प्रश्न न करो मालिन! तुम्हारा अनिष्ट करने के लिये नहीं। [हाथ में रत्नहार लेकर दिखलाती है।]

मालिन

सप पुकारने से नहीं आते। हाँ, एक दूसरी जगह से आज ही ला सकती हूँ।

मागंधिनी

कहाँ से ?

मालिन

राजधानी से बाहर श्मशान में एक ऐंद्रजालिक रहता है, उसने कई सर्प पाल रक्खे हैं। क्या वह राजरानी की प्रार्थना पर एक न दे देगा ?

मागंधिनी

नहीं, मेरा उल्लेख न करना होगा।

मालिन

मैं अपनी ही विनय पर ला सकूँगी।

मागंधिनी

जा, ले आ, आज ही ले आ। यही उपयुक्त दिन है। जो देखने में सबसे छोटा और विष में सबसे भीषण हो, उसी को लाना। कहना, मंत्रौषधि के लिये आवश्यक है।

मालिन

क्या जीवित ही लाना पड़ेगा ?

मागंधिनी

नहीं, ऐंद्रजालिक से उसे मंत्र-शक्ति द्वारा मूर्च्छित कर देने की विनती करना। जा, अभी जा। तुझे कितनी दूर जाना पड़ेगा ?

मालिन

आधे योजन के भीतर ही।

मागंधिनी

संध्या से पहले ही मुझे मिल जायगा ?

मालिन

निस्संदेह।

मागंधिनी

मैंने यह बात केवल तुझी पर प्रकट की है।

मालिन

मैं किसी पर भी प्रकट न करूँगी।

मागंधिनी

तू निश्चय ही पुरस्कार की अधिकारिणी होगी। [एक हाथ से हार दिखलाकर] ले, यह डलिया। इसमें नव-मल्लिका का आवरण हो, जिसमें वह मंत्र-मूर्च्छित सर्प छिपा हो।

[दूसरे हाथ से मालिन को डलिया देती है।]

मालिन

जो आज्ञा।

मागंधिनी

स्मरण रखना। इसी प्रयास में तेरी इस हार के पहनने की कामना पूर्ण हो। मैं अपने कक्ष के द्वार बंद कर संध्या से पूर्व तेरी ही प्रतीक्षा करूँगी, शृंखला झंकारित करना। तू मार्ग के प्रलोभनों पर विजय पावे। जा, चल दे। [पथ का निर्देश करती है।] मैं भी जाती हूँ।

मालिन

जो आज्ञा।

[एक ओर से मालिन, दूसरी ओर से मागंधिनी का प्रस्थान।]

अगला परदा गिरता है।

द्वितीय दृश्य

[स्थान--राजमहल का बाह्य देश । समय—
उसी दिन, दूसरे प्रहर । उदास मुख लेकर पद्मावती
का प्रवेश ।]

पद्मावती

कुछ भी समझ में नहीं आता । जितना इस दूर के पुष्प को चुनने के लिये हाथ बढ़ाती हूँ, उतना ही यह संचित पुष्प अंचल से च्युत होता ज्ञात होता है । कौन हो तुम ? शत-सहस्रदल में विकसित अमिताभ ! या अनंत काँटों में छिपे हुए कराल काल विषधर !..[कुछ विचारती है] किसी ने निश्चय महाराज से कुछ कह दिया है, तभी मेरे प्रति उनके भाव ठीक विरुद्ध दिशा को बदल गए । एक परिवर्तन और भी देख रही हूँ । वत्सराज की प्रसिद्ध वीणा सुप्त हो गई, उन्होंने गीत खो दिया । जिस दिन से उन्हें वीणा में गीत नहीं मिला, उसी दिन से मैंने उनके पास अपना प्रेम नहीं पाया । इन दोनो परिवर्तनों का कारण एक भी हो सकता है । [नेपथ्य की ओर देखकर] महाराज इसी ओर आ रहे हैं । मैं आज तो अवश्य ही उस कारण को स्पष्ट करूँगी ।

[उदयन का प्रवेश ।]

उदयन

पद्मावती !

पद्मावती

महाराज की जय हो ! महाराज मेरी खोज में हैं, सौभाग्य !

उदयन

तुम्हारे पास मेरी हस्तीस्कंध वीणा है ?

पद्मावती

हाँ, है। गीत के अभ्यास के लिये महाराज ने मुझे दी थी।

उदयन

मुझे उसकी आवश्यकता है।

पद्मावती

मैं ले आती हूँ।

उदयन

अभी नहीं, संध्या-समय।

पद्मावती

आज बहुत दिन पश्चात् महाराज को उसकी सुधि हुई।

उदयन

हाँ, मागंधिनी ने उसका स्मरण कराया है। वह उसे सुनना चाहती है, मैं भी गाना चाहता हूँ।

पद्मावती

किंतु महाराज, क्षमा प्राप्त हो। आपने तो उस दिन मुझसे कहा था, गीत वीणा में नहीं, मन में रहता है।

उदयन

यह अब भी सच है। मेरे मन में गीत नहीं रहा, इसी से इधर-उधर यंत्रों में खोजता फिर रहा हूँ।

पद्मावती

मैं इसी कारण को जानना चाहती हूँ महाराज! वह क्या है?

उदयन

कुछ भी नहीं कह सकता। केवल इतना ही जानता हूँ, मन में जो पहले अनंत गीत मालाएँ थीं, वे सब-की-सब टूट गई हैं। छिन्न हार के मोतियों की भाँति अब वहाँ मेरा विचार बिखर गया है। मैं उन्हें एकत्र करने का प्रयास भी नहीं कर सकता।

पद्मावती

क्यों महाराज?

उदयन

नहीं जानता।

पद्मावती

महाराज के दुर्ग्रह शांत हों। मुझसे तो कोई अपराध नहीं हो गया?

उदयन

तुमसे अपराध ? तुम क्यों ऐसा कहती हो पद्मावती !

पद्मावती

बहुत दिन पश्चात् आपकी भाव-गति का विचार कर कह रही हूँ।

उदयन

तो मैं भी शीघ्रता न करूँगा, विचारकर ही उत्तर दूँगा। इस समय मेरा मन एक नवीन समस्या में उलझा हुआ है, उसी को सरल करना चाहता हूँ।

पद्मावती

मेरे सुनने से कोई हानि तो न होगी ?

उदयन

प्रजा ने बोधिसत्व के विरुद्ध एक अभियोग खड़ा किया है।

पद्मावती

[आश्चर्य-पूर्वक] बोधिसत्व के विरुद्ध ! कैसा ?

उदयन

हत्या का।

पद्मावती

उसने प्रेम की अभय दुंदुभि बजाई है, उसी ने अहिंसा का विजय-मंत्र फूँका है। उसके विरुद्ध हत्या का अभियोग ? ..... झूठा होगा।

उदयन

बोधिसत्व ही के चार शिष्य साक्षी देंगे।

पद्मावती

वे क्रीत होंगे।

उदयन

उनके साथ माननीय पुरवासी भी हैं।

पद्मावती

महाराज के क्या विचार हैं ?

उदयन

उसी के लिये जाता हूँ, राजसभा जुट रही होगी। [जाना चाहते हैं।]

पद्मावती

साधु निरपराध ही होगा।

उदयन

तुम्हारा उससे संबंध ?

पद्मावती

उसके त्याग के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

उदयन

चुप रहो पद्मावती ! उदयन के न्याय में तुम्हारे अभिप्राय की पुट न होगी।

[उदयन का प्रस्थान।]

पद्मावती

[नेपथ्य की ओर देखकर] कौन ? मागंधिनी आ रही है ?

यह मुझे पहले-सी प्रिय प्रतीत नहीं होती। मुझे जाना चाहिए, क्योंकि इसके साथ का वार्तालाप भी मधुर नहीं।

[जाने लगती है।]

[एक ओर से मागंधिनी का प्रवेश।]

मागंधिनी

मुझसे क्या अपराध हो गया? मुझे देखकर ही जाने लगीं राजरानी!

पद्मावती

हाँ, तुम्हें देखकर ही हस्तीस्कंध वीणा की याद आई है। वह मेरे पास है, महाराज ने आज संध्या-समय उसे लाने की आज्ञा दी है। जाती हूँ। यदि कहीं तारों के नीचे धूलि पड़ी होगी, तो उसे स्वच्छ करूँगी।

मागंधिनी

तुम्हें जाना ही चाहिए।

पद्मावती

निस्संदेह, यह स्वामी की आज्ञा का पालन है, मधुरतर हो।

[पद्मावती का प्रस्थान।]

मागंधिनी

जाओ, जाओ। पर इसे महाराज की आज्ञा का पालन न समझना, यह मेरी इच्छा की पूर्ति है।

[फूलों की डलिया लेकर मालिन का प्रवेश।]

मालिन

जय हो राजरानी की !

मागंधिनी

कौन, मालिन ? तू प्रतिज्ञानुसार आ गई, पर मेरी अधीरता मुझे कक्ष के बाहर खींच लाई। तेरा प्रयास सफल हुआ ?

मालिन

हाँ।

मागंधिनी

इस डलिया में पुष्पों के अतिरिक्त भी कुछ है ?

मालिन

हाँ।

मागंधिनी

फूलों की ही भाँति शांत ?

मालिन

हाँ, वह भी।

मागंधिनी

इसे यहीं भूमि पर रख दे। मैं अब इसकी रक्षा में तेरा पुरस्कार न भूलूँगी।

[मालिन एक हाथ से डलिया के पुष्पावरण को हटाकर मागंधिनी को मूर्च्छित सर्प दिखलाती है। मागंधिनी डरकर पीछे हटती

है। मालिन सर्प को फिर फूलों से ढककर डलिया भूमि पर रख देती है। मागंधिनी अपने गले से रत्नहार उतारती है। मालिनी प्रसन्न होती है।]

मागंधिनी

ऐंद्रजालिक ने तेरी बात का विश्वास किया ?

मालिन

हाँ, मैंने अपने प्रत्येक कर्म से अपनी ही आवश्यकता प्रकट की।

मागंधिनी

यह रहस्य छिपाकर रखने में तुझे जो कष्ट होगा, उसे सहन करने के लिये यह ले।

मालिन

राजरानी की मनोकामना पूर्ण हो।

मागंधिनी

[मालिन को अपने हाथ से हार पहनाती है।] जिस तरह तेरी इच्छा पूर्ण हुई, क्यों ?

मालिन

हाँ, इस हार के साथ इस सर्प की कथा मेरे हृदय में रक्षित रहे।

मागंधिनी

जिस तरह सर्प के मस्तक में मणि।

मालिन

हाँ, उसी प्रकार। सर्प मणि खोकर जीवित भी रहता होगा, मुझे मृत्यु प्राप्त हो।

मागंधिनी

अच्छा जा. चुपचाप चली जा। संध्या-समय इसे इसी प्रकार लेने के लिये आना और मेरी खोज करना।

[मालिन कृतार्थ होकर जाती है। मागंधिनी चुपके से फूल की डलिया उठाती और सावधानी से राजमहल के भीतर चली जाती है।]

पटोत्तोलन

तृतीय दृश्य

[स्थान—उदयन का विलास-भवन। समय—
उसी दिन, संध्या से पहले। उदयन बैठे हुए वीणा
मिला रहे हैं, पर सफल नहीं होते। कभी तार
टूट जाता है, कभी उलझ जाता है।]

उदयन

[निराश स्वर में] सफलता न होगी क्या? कभी आलस्य से तार उलझ जाता है, तो कभी अभिमान से टूट जाता है। स्वर आज स्थिर न होगा। जो मन नित्य नवीन गीतों की सृष्टि करता था, वह आज शंकाओं की पांथशाला है। [कुछ विराम देकर] अमिताभ बोधिसत्व को मैं शांत, स्थिर तपस्वी समझता था, मागंधिनी ने जो कुछ मुझे दिखाया, वह भी झूठ नहीं, तब? प्रजा का अभियोग प्रपंच नहीं, उज्ज्वल सत्य है, और जिसे हम बोधिसत्व समझते हैं, वह मध्यम मार्ग का पथिक नहीं, उसके भीतर हमारी ही तृष्णा से परिव्याप्त मन है। किस प्रकार ढका हुआ, किस आवरण में! विकट मनुष्य स्वभाव! हम इसे नहीं समझेंगे।

[व्यथित होकर वीणा दूर रख देते हैं। इसी समय
पद्मावती हस्तीस्कंध वीणा लेकर आती है।]

पद्मावती

वत्सराज की जय हो! स्वामी के आज्ञानुसार मैं वीणा ले आई हूँ। मागंधिनी अभी तक नहीं आई, तब तक यह दासी इसे सुनना चाहती है। सुनती हूँ, इसने एक दिन वत्सराज के लिये सेना और सेना के लिये वाहन, दोनो एकत्र किए थे।

उदयन

यह सत्य भी है, विजय का गीत भी है, तो भी नहीं सुहाता। मैं अवश्य ही गीत भूल गया हूँ। यह वीणा उस कोने में रखकर चली जाओ पद्मावती!

[पद्मावती कोने में वीणा रखकर चुपचाप खड़ी ही रहती है।]

उदयन

तुम यहीं खड़ी रह गईं, क्यों?

पद्मावती

अपना प्रेम चाहती हूँ।

उदयन

मनोहर आवरण में ढके हुए विशुद्ध स्वार्थ का नाम प्रेम है। कोई किसी को प्यार नहीं करता पद्मावती! इसका ध्यान ही छोड़ो।

पद्मावती

इस पर पहले महाराज दूसरी तरह से विचार करते थे।

उदयन

हाँ, यही सोचता था कि प्रेम ही संसार का आधार और वही उसकी सबसे बड़ी विभूति है। किंतु अब समझ में आता है, वह सब धोका था। क्या हमें अपने नए अनुभव से पुरानी भूल न सुधारनी चाहिए ?

पद्मावती

सत्य नवीन का पर्याय नहीं।

उदयन

[रुष्ट होकर] यदि तुम यहाँ से नहीं जाना चाहतीं, तो चुप रहो पद्मावती !

पद्मावती

क्या मागंधिनी भी आपसे यही उत्तर पाती है ?

उदयन

मुझे मत सताओ पद्मा ! मेरे मन में चैन नहीं है। न बोलो।

पद्मावती

ऐसे रूखे शब्द स्वामी ! यह बोलना एक दिन संगीत था। इस कक्ष की प्रत्येक ईंट इसकी साक्षी है।

उदयन

कक्ष की ईंटें .... होंगी।

पद्मावती

पुरुष की प्रशंसा का कुछ भी मूल्य नहीं।

उदयन

उसकी घृणा का हो।

[उदयन जाना चाहते हैं।]

पद्मावती

महाराज ! [उदयन का हाथ थाम, घुटने टेककर] केवल एक प्रश्न—

उदयन

अब इस समय कुछ भी नहीं।

पद्मावती

आपने आज की राजसभा में बोधिसत्व का न्याय प्रकट किया ?

उदयन

[अनसुनी कर] छोड़ दो, मैं इस समय उपवन में जाकर अपने व्यथित चित्त को शांति देना चाहता हूँ।

[उदयन का पद्मावती का हाथ झटककर
शीघ्रता से प्रस्थान।]

पद्मावती

यह अपमान ! ऐसी विरक्ति ! मुझसे क्या अपराध हो गया ? मैंने राजभवन के प्राचीर में छिद्र किया है, यही केवल महाराज पर प्रकट नहीं। [गवाक्ष-द्वार से बाहर देखकर] सूर्य की किरणें कोमल पड़ गई हैं, उसके आने का समय हो गया। जीवन के विषाद की घड़ियों में उसके आगमन का

पुण्य विचार शांति दे। मैं आज मन-ही-मन उससे महाराज के मंगल की कामना करूँगी। वह तपस्वी सब कुछ जानता है उसका आशीर्वाद क्या नहीं दे सकता ?

[पद्मावती जाती है। इसी समय सामने से परदे के पीछे छिपी मागंधिनी वही फूल की डलिया लिए आगे बढ़ती और फिर डलिया परदे की ओट में रख देती है।]

मागंधिनी

महाराज की वाणी में मेरा निवास है, उस आज्ञा का निरादर पद्मावती नहीं कर सकती। इसी से यह वीणा इस डलिया से पहले आ गई, इसे आना ही चाहिए था। मुझे फिर अधीरता के कारण परदे के पीछे रहना पड़ा। [हस्तीस्कंध वीणा हाथ में लेकर] जो छिद्र पद्मावती ने राज-महल में किया है, वही इस वीणा में भी है। इसी राह से उस सर्प को वीणा में रख दूँगी। [वीणा रखकर पुष्प की डलिया उठा लाती है।] यदि यह जाग उठा हो, और मेरी उँगली काट ले, तो ?—अब भय की आवश्यकता क्यों हगी ? [सावधानी से एक हाथ से डलिया के ऊपरी फूल एक ओर करती है।] कराल काल विषधर ! चुपचाप पड़ा सो रहा है। मैं अपने मार्ग के कंटक दूर करने के लिये जीवित-जागरित सर्प को भी उठा लूँगी। यह तो मंत्रों से बँधा हुआ रज्जुवत् है।

[डलिया से मंत्र-मूर्च्छित सर्पनिकालकर हस्तीस्कंध वीणा के छिद्र से उसके अंदर डाल देती और वीणा वहीं रख देती है।]

इस चिनगारी को प्रज्वलित करने के लिये महाराज के इस [प्राचीर में टँगे हुए धनुष-बाण को लक्ष्य कर] धनुष-बाण को उनके निकट आना चाहिए। [प्राचीर से धनुष उतारती है।] ये ही विष-बुझे बाण हैं। [तूणीर भी उतारती है, और दोनो को महाराज के आसन के निकट भूमि पर रख देती है।] अब ठीक समय पर प्रकट होने के लिये मैं वहीं छिप जाती हूँ। [नेपथ्य में देखकर] महाराज आते हैं।

[डलिया लेकर द्रुत गति से परदे के पीछे छिप जाती है। उदयन का प्रवेश।]

उदयन

तिरस्कृत होकर चली गई। उसके जाने के लिये ही ऐसा किया। [हस्तीस्कंध वीणा उठाकर] बहुत दिनों से इसका स्पर्श भी नहीं किया, इसी से कुछ भारी ज्ञात होती है। उस समय पद्मावती ने ठीक ही कहा था। वत्सराज ने बाण से नहीं, वीणा से कौशांबी को विजित किया। यह भी सच ही। [वीणा झंकारित कर गाते हैं।]

गीत

सोहनी—तीन ताल

चमक तारिके ! तम में।

(१)

भूल हुई जो, उसे भूल जा ;
शूलों में रे सुमन ! फूल जा।
ढल जा किसी नियम में।
चमक तारिके ! तम में।

(२)

जिससे तूने भय पाया है,
यह तो तेरी ही छाया है,
न जा दूर विभ्रम में।
चमक तारिके ! तम में।

(३)

पथ बिसरा है, तो फिर से चल ;
ठोकर से बच, देख फिर सँभल।
आ जा सम से सम में।
चमक तारिके ! तम में।

[गाते-गाते उदयन गीत बंद कर देते और केवल वीणा बजाते रहते हैं। कुछ देर में उस मधुर स्वर-सुधा से वीणा के भीतर पड़े सर्प की मूर्च्छा भंग होती है। वह वीणा के भीतर से निकल-कर भूमि पर कुंडली के आकार में बैठता और अपना फण फैलाकर वीणा की गति में नृत्य करने

लगता है। महाराज कुछ चौंककर, फिर अधिक स्थिर होकर वीणा बजाते रहते हैं।]

उदयन

[वीणा बजाते-बजाते] यही काल है! मैं इसे न भूलूँ, मुझे इससे प्रीति हो। आज मुझे अनेक दिन पश्चात् गीत मिला। इसके भय से उसका त्याग न किया जायगा।

[वीणा कुछ क्षण उसी प्रकार बजती है। सर्प उसी प्रकार मुग्ध होकर नाचता है। हठात् मागंधिनी परदे के पीछे से प्रकट होती है; पास ही रक्खा हुआ एक चौड़े मुँह का बर्तन उठा, उसका मुख नीचे कर उस सर्प के ऊपर रख देती है। फिर स्वयं उस बर्तन पर बैठ जाती है। उदयन बाधा पाकर वीणा-वादन बंद कर देते हैं।]

उदयन

कौन?

मागंधिनी

आप यह क्या कर रहे हैं?

उदयन

प्रिये! तुमने ही यह क्या किया? इसे ऐसा ही क्यों न रहने दिया? आज मुझे बहुत दिन बाद गीत मिला था। इस काल-सर्प के नृत्य से उसकी गति बड़ी मधुर हो गई थी।

(१)

भूल हुई जो, उसे भूल जा ;
शूलों में रे सुमन ! फूल जा ।
ढल जा किसी नियम में ।
चमक तारिके ! तम में ।

(२)

जिससे तूने भय पाया है,
यह तो तेरी ही छाया है,
न जा दूर विभ्रम में ।
चमक तारिके ! तम में ।

(३)

पथ बिसरा है, तो फिर से चल ;
ठोकर से बच, देख फिर सँभल ।
आ जा सम से सम में ।
चमक तारिके ! तम में ।

[गाते-गाते उदयन गीत बंद कर देते और केवल वीणा बजाते रहते हैं । कुछ देर में उस मधुर स्वर-सुधा से वीणा के भीतर पड़े सर्प की मूर्च्छा भंग होती है । वह वीणा के भीतर से निकल-कर भूमि पर कुंडली के आकार में बैठता और अपना फण फैलाकर वीणा की गति में नृत्य करने

लगता है। महाराज कुछ चौंककर, फिर अधिक स्थिर होकर वीणा बजाते रहते हैं।]

उदयन

[वीणा बजाते-बजाते] यही काल है! मैं इसे न भूलूँ, मुझे इससे प्रीति हो। आज मुझे अनेक दिन पश्चात् गीत मिला। इसके भय से उसका त्याग न किया जायगा।

[वीणा कुछ क्षण उसी प्रकार बजती है। सर्प उसी प्रकार मुग्ध होकर नाचता है। हठात् मागंधिनी परदे के पीछे से प्रकट होती है; पास ही रक्खा हुआ एक चौड़े मुँह का बर्तन उठा, उसका मुख नीचे कर उस सर्प के ऊपर रख देती है। फिर स्वयं उस बर्तन पर बैठ जाती है। उदयन बाधा पाकर वीणा-वादन बंद कर देते हैं।]

उदयन

कौन?

मागंधिनी

आप यह क्या कर रहे हैं?

उदयन

प्रिये! तुमने ही यह क्या किया? इसे ऐसा ही क्यों न रहने दिया? आज मुझे बहुत दिन बाद गीत मिला था। इस काल-सर्प के नृत्य से उसकी गति बड़ी मधुर हो गई थी।

मागंधिनी

यह हलाहल-भरा मेरे प्राणेश्वर के कण्ठ में कहाँ से आ गया ?

उदयन

इसी वीणा से निकला, इसका अनिष्ट न विचारो, यह शत्रु नहीं।

मागंधिनी

यह वीणा पद्मावती ही रख गई थी न ?

उदयन

हाँ, तुम्हारी गीत सुनने की इच्छा पूर्ण करने के लिये, किंतु तुम उसे अब न सुन सकोगी। तुमने गीत इस प्रकार भंग कर दिया कि अब वह कहीं न मिलेगा।

मागंधिनी

मुझे इसकी कुछ भी चिंता नहीं। आपकी रक्षा के लिये मैं अपनी प्रियतम वस्तु का बलिदान करूँगी। [पद्मावती का विचारकर] डायन ! राक्षसी ! तू वत्सराज के भवन में किस अमंगल की चेष्टा कर रही है ? रानी के वेश में छिपी पिशाचनी !

उदयन

कौन ?

मागंधिनी

पद्मावती के अतिरिक्त और कोई भी नहीं।

यह सर्प उसी ने आपकी वीणा में रक्खा है। किसलिये ? इसे भी समझती हूँ। मुझे अपने जीवन की चिंता नहीं, उसका त्यागकर भी आपकी रक्षा करूँगी। इसे वह नहीं जानती। शिला दूर होगी, तो मैं अपनी मुष्टिका से इसका विष-भरा माथा कुचल दूँगी।

उदयन

उसे क्षमा करो मागंधिनी! तुमने नहीं सुना ? नग्न-पद बोधिसत्व नगर और ग्राम में कहता फिर रहा है—"शत्रु को मित्र समझकर क्षमा करो।" लोग उसकी आज्ञा का पालन करने लग गए हैं।

मागंधिनी

हाँ, यही बोधिसत्व का उपदेश है। उसकी कीर्ति अवश्य इन्हीं उपदेशों पर स्थापित होती जा रही है, पर उसके कर्मों में इनकी छाया भी नहीं पड़ी। क्या आपने उसके सन्निकट रहकर उसका अभ्यास देखा है ? कभी नहीं। आज की राजसभा में प्रजा की उसके विरुद्ध जो पुकार थी, क्या वह सुनी ?

उदयन

हाँ।

मागंधिनी

ध्यान-पूर्वक, पक्षपात-रहित ?

उदयन

हाँ-हाँ, केवल राजसभा में ही नहीं, राजमहल में भी। मैंने उसके संबंध में एकासन बैठकर और जागकर विचार किया है।

मागंधिनी

विचारकर क्या स्थिर किया ?

उदयन

यही कि बोधिसत्व निर्दोष है, विरोधी दल ही झूठा है।

मागंधिनी

क्या प्रजा आपके इस न्याय से संतुष्ट होगी ? क्या राज्य-संचालन दुर्विचार से होगा ?

उदयन

तुम इसे दुर्विचार कहती हो ? तुम्हें मेरे न्याय का विश्वास नहीं ?

मागंधिनी

केवल मेरे विश्वास से क्या होता है ? अधिकांश प्रजा इसे अन्याय समझती है। वह जन और जनपद में घोषित कर क्या शेष प्रजा के मन को विषाक्त न कर देगी ? बोधिसत्व के प्रति पहले ही आपका आदर-भाव देखकर प्रायः समस्त देश को विश्वास हो गया है कि महाराज शीघ्र ही प्रव्रज्या ग्रहण कर राज्य में नास्तिक-वाद प्रचारित करेंगे ? क्या यह सब कुछ गुप्तचरों द्वारा प्रकट नहीं ?

उदयन

क्या बोधिसत्व नास्तिक है ?

मागंधिनी

आप प्रजा के रक्षक हैं। क्या आपके धार्मिक विचारों का अनुसरण करने को प्रजा बाध्य है ? क्या आपके इस न्याय से धर्म-विप्लव दूर रहेगा ? क्या उस वैषम्य में आपका राजमुकुट रक्षित रह सकेगा ?

उदयन

प्रिये ! मागंधिनी ! तुमने सच ही कहा है। यही विचार-कर मैंने आज की राजसभा में बोधिसत्व के संबंध में कुछ भी निर्णय नहीं किया।

मागंधिनी

तो अभी कुछ भी क्षति नहीं हुई। राजपथ के अपराधी को भी दंड मिले, और राजभवन का दोषी भी न छूटे।

उदयन

मैं समझ गया, वह अभागिनी पद्मावती है। एक समय इसके अतिरिक्त जीवन और जगत् में कुछ भी नहीं दिखाई देता था। आज बार-बार यही इच्छा रखता हूँ कि इसी की छाया छिपी रहे, इसी का स्वर मूर्च्छित रहे, और केवल इसी की स्मृति मिटी रहे। [वीणा दूर रख देते हैं।]

मागंधिनी

राजन् ! इसी ने राजभवन में छिद्र किया है। वही

इस सर्प को आपके भवन में लाई है। मैं इसका अंत करूँगी, आप उसका न्याय करें।

उदयन

तुम ठीक कहती हो। जीवन शंका के सघन अंधकार में विलीन हो गया है। पथ-भ्रष्ट होकर मन द्वैत में विकल है। बहुत दिनों से इन दोनो में से एक को चुनना चाहता हूँ। यही अंतिम निर्णय हो। [उत्तेजित हो आसन से उठ जाते हैं।]

मागंधिनी

कौन-सा ?

उदयन

राजसभा में बोधिसत्व के ही विरुद्ध शब्द सुनता हूँ। राजभवन के छिद्र से भी वही दिखाई देता है।

मागंधिनी

तो निर्णय क्या किया ?

उदयन

यही कि बोधिसत्व ही अपराधी है।

मागंधिनी

अपराधी का दंड ?

उदयन

कल प्रभात से पहले मेरे राज्य की सीमा से शिष्यों-सहित उसका निर्वासन।

मागंधिनी

और पद्मावती ?

उदयन

वह मेरे राज्य की सीमा के बाहर भी न रहने पाएगी।

मागंधिनी

अर्थात् ?

[मागंधिनी द्वारा भूमि पर रक्खे हुए धनुष-बाण पर उदयन की दृष्टि जाती है।]

उदयन

धनुष-बाण इतने निकट हैं !

[उत्तेजित होकर धनुष-बाण सँभालते हैं।]

मागंधिनी

[बर्तन पर बैठे-बैठे] राजन् !

उदयन

अब कुछ मत कहो मागंधिनी ! तुमने जो शंका मेरे मन में बोई थी, आज वह फलवती होना चाहती है।

मागंधिनी

मैं कैसे कुछ कहूँ, मैं पद्मावती के दुर्विचार को बंदी करने में स्वयं बंदी हो गई हूँ।

[उदयन का सवेग प्रस्थान।]

मागंधिनी

जाओ, जाओ, मेरा समस्त बल इस समय तुम्हारा सहा-

यक हो। यह मेरा ही दिखाया हुआ पथ है, इससे मेरे पथ की बाधा दूर हो। [नेपथ्य की ओर देखकर पुकारती है।] मालिन ! वह मेरी आज्ञा के अनुसार वहीं प्रतीक्षा करती होगी। [फिर पुकारती है।] मालिन ! मालिन ! [मालिन से पुकार का कोई उत्तर नहीं मिलता।] मालिन ! उत्तर नहीं देती, कहाँ रह गई ? गीत-मुग्ध सर्प को मैंने बाधा देकर छेड़ा है। यह बड़ी देर से फुंकार रहा है। क्रोध से इसका विष उबलकर श्वास के साथ निकल रहा है। इसे मालिन ही कौशल से अपने वश में करेगी। मालिन ! मालिन !

[मालिन को पुकारती है, पर मालिन
नहीं आती।]

दृश्य-परिवर्तन

चतुर्थ दृश्य

[स्थान—पद्मावती का कक्ष । समय—वही संध्या । महाराज उदयन का चित्र हटाकर पद्मावती छिद्र से बाहर राजपथ को देखती हुई गा रही है ।]

गीत

जोगा-आसावरी—मिश्र ताल

मैं श्रांत, क्लांत हूँ वन में ;
तुम छली ! छिपे हो मन में ।

(१)

विष-विरह-गीत तज दूँगी ;
बिखरे आँसू गूँथूँगी ।
प्रियतम के प्रेम-मिलन में ;
अपने ही भाव-भवन में ।

(२)

क्यों मग को अधिक विचारूँ ?
तुम की ठोकर से हारूँ ?
तुम ध्रुव नक्षत्र गगन में ;
तुम अब न छिपोगे घन में ।

(३)

मैं बँधी कर्म-बंधन में ;
हूँ प्रिय के आलिंगन में ।

बजने दो वंशी वन में ;
क्या है उस आकर्षण में ।

पद्मावती

[बहुत दिनों से रक्खे हुए कुछ सूखे फूल हाथ में लेकर] तुम्हारी उपासना के लिये ये फूल बहुत दिनों से रक्खे हैं। रक्खे-रक्खे इनकी श्री उड़ गई, ये सूख गए ! तुम मेरे मन ही में हो, किंतु मैं इसका विश्वास नहीं करती। तुम्हें बहुत दिनों से राजपथ में खोज रही हूँ, तुम केवल क्षण-भर दिखाई देकर फिर छिप जाते हो। मैंने नित्य नवीन आशाओं की सृष्टि की, तुमने कभी उन्हें पूर्ण न होने दिया। आशा, कर्म की प्रबल शत्रु ! इस प्राचीर-छिद्र से अनेक आशाओं की सेना मेरे कक्ष में आती है। मैं अकेली उनसे लड़ नहीं सकती। मैंने अच्छा ही किया, जो उस दिन ये ईंटें फेंक न दीं। [कोने में सुरक्षित ईंटों के एक ढेर को संकेत करती है।] ये अपनी जगह में जायँ। मैं इस छिद्र को ढक देती हूँ, राजपथ दृष्टि के सामने से दूर हो। [एक ईंट उठाकर छिद्र में रखती है।] यह छिद्र मैंने अपने वक्ष में किया है ! इससे होकर मेरे मन की वेदना कई दिनों से राजपथ में फिर रही है। वह पगली है ; चंचल नेत्र, मुक्त केश और बिखरा अंचल लिए वह दसो दिशाओं में किसी को खोज रही है। [हाथ के फूल भूमि पर बिखरा देती है।] वह नहीं मिलता। राजपथ के पथिक न-जाने अपने मन में क्या

विचारते होंगे ? क्या कहते होंगे ? मैं लज्जा से सीता की भाँति पृथ्वी में गड़ी जा रही हूँ। जिधर देखती हूँ, उधर से ही ये अनेक तर्जनियाँ, एक ही काल में, मेरी ओर संशय-संकेत कर रही हैं। वत्सराज ! देखिए, देखिए, पद्मावती ने आपके प्राचीर के छिद्र का अंत करना आरंभ कर दिया है। [दो-तीन ईंटें उठाकर क्रमशः छिद्र में चुनती है।] अमिताभ इस छोटे-से छिद्र से नहीं, मेरे सिंह-द्वार से मेरे भवन में पधारें, मैं उसे सदैव खुला रक्खूँगी। किंतु केवल एक ही बार और, यही अंतिम बार हो। वह संन्यासी आना चाहता है। [छिद्र से ईंटें निकालकर फेंक देती और बाहर देखती है।] वृक्षों की हरियाली से कदाचित् उसी के काषाय वस्त्रों का बोध हो रहा है। वही है। निकट आने से मूर्ति अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही है। किसी विमोहक गीत की भाँति कैसी स्थिर गति है। इन्हीं चरणों से करुणा की गंगा बही है, ये ही नवीन युग लाए हैं। मैं इन सूखे फूलों को शीघ्र एकत्र कर लूँगी। [भूमि पर बिखरे फूलों को शीघ्र उठा लेती है।] राग, रूप और रस की भरी कोटि-कोटि मार-सेना जिसकी मुद्रा न तोड़ सकी, उसके लिये इन फूलों में कौन-सा आकर्षण है ? फिर भी न-जाने किस लिये मैं ये सूखे फूल उसे समर्पित करना चाहती हूँ। [फूल राजपथ पर जाते हुए बोधिसत्व के ऊपर बरसाना चाहती है, हठात् नेपथ्य से शब्द करता हुआ एक बाण आता और छिद्र की राह बाहर चला जाता है। पद्मावती भयभीत होती है।]

यह तीर ही था, सनसनाता हुआ छिद्र पाकर बाहर चला गया। क्या किसी ने मुझे लक्ष्य किया ?

[उदयन का दूसरा तीर चढ़ाते हुए प्रवेश।]

हाँ-हाँ, तुझे ही लक्ष्य किया था; किंतु लक्ष्य भ्रष्ट हो गया, तू बच गई !

पद्मावती

और महाराज ने मुझे क्षमा कर दिया। मैं आपके सम्मुख ही यह राजपथ दिखानेवाला छिद्र बंद कर देती हूँ।

उदयन

यह तीर छूटने के पश्चात् यदि मेरे हृदय की ज्वाला शीतल पड़ जाय, केवल तभी।

पद्मावती

तो क्षण-भर ठहरिए नाथ ! मैं प्रतिमावत् अचल होकर इस छिद्र को अपने अंग से ढक दूँगी कि लक्ष्य भ्रष्ट न हो।

[पद्मावती छिद्र अपनी पीठ से ढककर अचल खड़ी हो जाती है। उदयन तीर छोड़ते हैं। इठात् मालिन का पगली की भाँति प्रवेश।]

मालिन

[उदयन के चरणों में गिरकर] क्षमा, महाराज ! क्षमा। रानी मागंधिनी ने स्वयं ही मुझसे वह सर्प मँगाया था। आपके विलास-भवन में उस कराल काल विषधर ने उन्हें काट लिया, मैं निर्दोष हूँ।

उदयन

तुमने क्या सुनाया ? मागंधिनी ! मागंधिनी ! [जाना चाहते हैं ।]

मालिन

उनके उत्तर देनेवाले अधर क्षण-भर में ही शिलावत् हो गए, अब सब प्रयत्न निष्फल हैं ।

उदयन

मागंधिनी ! सर्प तुमने मँगाया ? पद्मावती ! तेरी हत्या मैंने की ।

[मालिन चुपके से चली जाती है ।]

पद्मावती

तीसरा तीर यदि लक्ष्य-भ्रष्ट न हो, तो ।

उदयन

[हर्षित होकर] तुम जीवित ही हो ?

पद्मावती

मर नहीं सकी ! पापी प्राण !

उदयन

यही सौभाग्य है ! मेघ जान पड़ता है, हट गए । शुद्ध ज्योति में स्पष्ट देख रहा हूँ, कोई भी अपराधी नहीं । बोधि-सत्व निर्दोष है, तुम भी कलंक-हीन हो ।

पद्मावती

वत्सराज की जय हो ! यह दूसरा तीर फिर आपकी

अस्थिरता से लक्ष्य-भ्रष्ट हुआ। यह इस प्राचीर में धँसकर बाहर का मार्ग खोज रहा है। [दीवार में धँसा तीर खींचकर निकालती और उदयन को देती है।] लीजिए, राजन् ! इसे तूणीर में रख लीजिए।

[हठात् अमिताभ का एक दूसरा तीर लेकर प्रवेश।]

अमिताभ

और राजन् ! इसे भी वहीं स्थान दो।

उदयन

[हर्षोत्फुल्ल होकर] कौन, बोधिसत्व ?

पद्मावती

[आनंद-मग्न होकर] अमृतपद-प्राप्त अमिताभ !

उदयन

हम कृतार्थ हुए।

पद्मावती

मेरी चिर संचित आशाएँ पूर्ण हुईं।

[दोनो शीश झुकाते हैं।]

उदयन

[तीर लेकर] यह तो मेरा ही बाण है।

अमिताभ

हाँ, कदाचित् [छिद्र दिखाकर] इसी छिद्र से बाहर आया। [पद्मावती छिद्र के आगे उदयन का चित्र रख देती

है।] मार्ग के वृक्ष में उलझने से अपनी शक्ति खोकर यह मृत्यु का दूत, दीन और आर्त की भाँति, मेरे चरणों पर आ गिरा। इस तीर में महाराज उदयन का नाम अंकित देखकर मैं महाराज को खोजता हुआ इधर चला आया हूँ। प्रहरियों ने मेरे मार्ग में कोई बाधा नहीं रक्खी।

[उदयन तीर लेकर तूणीर में रखते हैं।]

पद्मावती

यह सुदिन मंगलमय हो, मैं बुद्ध की शरण हूँ।

उदयन

मैं भी उन्हीं की छाया चाहता हूँ। मेरी भी धर्म में मति हो।

[उदयन और पद्मावती, दोनो अमिताभ बोधिसत्व के चरणों में गिरते हैं।]

अमिताभ

तथास्तु। तुम्हारा संघ में प्रवेश हो।

[अमिताभ दोनो हाथ बढ़ाकर उन्हें आशीर्वाद देते हैं। आकाश से पुष्प-वर्षा होती है।

स्तब्ध दृश्य।]

यवनिका-पतन

परिशिष्ट

० ० गीतों की स्वरलिपि ० ०

❀ ❀ ❀

स्वरकार

श्रीपं० नारायण मोरेश्वर खरे

संगीताचार्य

स्वरलिपि के संकेत

१. जिन स्वरों के नीचे बिंदु हो, वे मंद्र सप्तक के, जिनमें कोई बिंदु न हो, वे मध्य सप्तक के तथा जिनके शीर्ष में बिंदु हो, वे तार सप्तक के हैं। जैसे—सा, सा, सां

२. जिन स्वरों के नीचे लकीर हो, वे कोमल हैं। जैसे—रे, ग, ध, नि। जिनमें कोई चिह्न न हो, वे तीव्र हैं। जैसे—रे, ग, ध, नि। शुद्ध मध्यम का चिह्न 'म' और तीव्र मध्यम का चिह्न 'म' है।

३. सम का चिह्न ×, ताल के लिये अंक और ख़ाली का द्योतक ० है।

४. —यह दीर्घ मात्रा का चिह्न है।

५. ⌣ इस चिह्न में जितने स्वर रहें, वे एक मात्रा में गाए या बजाए जायँगे। जैसे—सारे।

६. ❀ यह विश्रांति का चिह्न है।

१. नटी-सूत्रधार की प्रार्थना

कल्याण—तीन ताल (विलंबित)

स्थायी

नि

वि

० | | ३ ×

ध नि धमप- -म | ग रे -❀ सा | नि़ ध़ नि़ रे

ज य में--- -- | छि पी -❀ प | रा - ज य

२

ग - - - |

हो - - - |

| | |

प ग प - | धमम- - ग रे | नि़ रे रेग-- रे

दुः ख छा - | या--- - हो - | सु ख म--- य

नि़ सा - ग |

हो - - तु |

अंतरा

०			३			×			
म	–	ग	म	–	ध	मध	निसां	सां	–
म्हा	–	रे	सं	–	के	तों–	– –	में	–

२									
सां	–	सां	नि						
ना	–	थ	नि						
नि	रें	गंरें	गं	रेंनि	नि	ध	नि	ध नि	निध नि
र	त	हों–	—	हा–	–	थ	वि	न त	हो– –

।।									
धमम	–	ग	प						
मा–	—	थ	तु						

प-निध	नि	धमप	-म	ग	रे	नि	सा	निरे गम	धनि सांनि
म्हा– – –		रा– – –		ही	–	त	म	में– –	भ– य–

धप	मग	रेसा	नि						
हो– – –		–	वि						

शेष अंतरे भी इसी प्रकार।

२. पद्मावती का गीत

हमीर—तीन ताल

——:०:——

स्थायी

०				३				×			
म	म	प	ध	धमप-	-म	ग	म	ध	—	—	ध
फि	र	न	मि	ले---	--	गा	—	प्रा	—	—	ण

२				
धनि	सांनि	धप	मप	
आ·	--	--	--	

म	म	प	ध	धमप-	-म	ग	म	ध	—	—	—
फि	र	न	मि	ले---	--	गा	—	प्रा	—	—	—

—	—	ध	❀
—	—	ण	❀

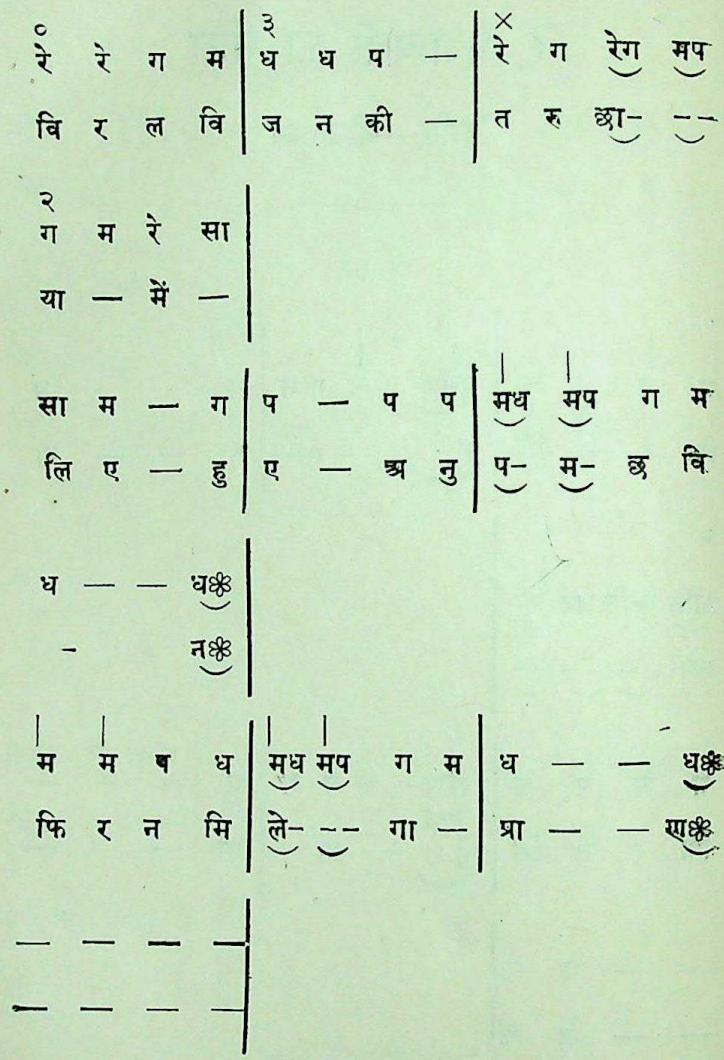
० ३ ×
रे रे ग म | ध ध प — | रे ग रेग मप
वि र ल वि | ज न की — | त रु छा- --
२
ग म रे सा
या — में —
सा म — ग | प — प प | मध मप ग म
लि ए — हु | ए — अ नु | प- म- छ वि
ध — — धऋ
— नऋ
म म ष ध | मध मप ग म | ध — — धऋ
फि र न मि | ले- -- गा — | प्रा — — णऋ
— — — —
— — — —

अंतरा

०				३				×			
प	प	प	प	प	प	सां	ध	सां	—	सां	—
क	ब	त	क	स्मृ	ति	में	—	पा	—	ऊँ	—

२			
सां	—	सां	सा
जी	—	व	न

सां	ध	सां	सां	सां	—	रें	—	❀	सारें	निसां	—
क	ब	त	क	स्व	—	प्नों	—	❀	का-	आ-	—

निध	—	प	प
लिं-	—	ग	न

सां	सां	मं	मं	रें	—	सां	—	❀	धनि	सां	रें
क	ब	त	क	बै	—	ठे	—	❀	शू-	न्य	स

सां	सांनि	ध	—
द्	न-	में	—

म	—	प	ध	म	प	ग	म	ध	—	—	ध॰
मा	—	ला	ज	पूँ	क	रूँ	मैं	ध्या	—	—	न॰

धनि	रेंसां	निध	मप	
आ-	- -	- -	- -	

शेष अंतरे भी इसी प्रकार।

३. मागंधिनी का गीत

भैरवी—एक ताल (द्रुत)

——:०:——

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प	-	प	प	प	प	ध निध		नि धप		मग	म
चं	-	द्र	कि	र	ण	चं - -		बि ता-		- -	प्र

प	ध	सांनि	धप	मग	म	रे	ग	रे	सा	—	॰
कु	-	ल्ल	श-	र-	द	या	-	मि	नी	—	॰

×	०	२	०	३	४
ग –	रे ग	ग रे	साग मप	ध प	म प
कौ –	न वि	ज न	में– –	ब जा	— र
प ध	नि धप	मग म	रे ग	रे सा	— ❀
हा —	वि यो–	– – ग	रा –	गि नी	— ❀

अंतरा

×	०	२	०	३	४
❀ म	म ध	– नि	सां —	सां सां	— सा
❀ आ	शा –	– के	गूँ —	थ हा	— र
❀ नि	नि सां	सां –	नि रें	सां नि	ध प
❀ मु	क्त कि	ए –	स द	न द्वा	— र
गं गं	गं रें	– गं	गं मं	पं मंगं–	रें गं
नि र	ख पां	– थ	हु ई	– श्रां–	— त
सां रें	सांनि धप	मग म	रे ग	रे सा	— ❀
क व	की– –	अ– नु	रा –	गि नी	— ❀

शेष अंतरा भी इसी प्रकार।

४. उदयन का गीत

दरबारी कानड़ा—तीन ताल

स्थायी

०				३				×			
मग	—	म	रे	सा	—	सा	सा	नि	सा	रे	—
कौ-	—	न	छि	पे	—	तु	म	त	म	में	—

२				
मग--	मप	-	ग	-
प्या---	----		रे	-

❀											
म	म	म	प	—	प	प	पनि	सांरें	निसा	निप
मं	जु	म	नो	—	ह	र	वे-	--	श-	सँ-

मप	निप	मग	—	
भा-	--	रे-	—	

अंतरा

०				३				×			
❀	म	म	म	प	प	ध	निध --	नि	नि	सां	सां
❀	र	वि	थ	ल	में	श	त- --	द	ल	वि	क

२		
सां	—	सां —
सा	—	वे —

❀	निनि	सां	सां	रें	रें	सां	—	नि	सां	रें	सां
❀	तम	न	भ	में	—	ता	—	रि	का	—	खि

निसां	रेंसां	ध	नि
ला-	--	वे	—

सां	मं	मं	रें	सां	सां	सां	—	नि	सां	रें	प
छा	—	या	—	कि	र	णों	—	की	—	जा	—

नि	प	म	प
ली	—	में	—

०				३				×			
सां	—	—	प	नि	प	म	प	मप	मप	निप	मप
तु	—	—	म्हें	—	खो	—	ज	हा–	– –	– –	– –

२			
मग	—	म	—
रे–	—	—	—

शेष अंतरा भी इसी प्रकार।

५. उदयन का गीत

सोहनी—तीन ताल

——:०:——

स्थायी

०				३				×			
नि	सां	नि	धम	—	ग	म	ध	नि	नि	सां	—
च	म	क	ता–	—	रि	के	—	त	म	में	—

२				
—	❀	मध	निसा	
—	❀	– –	– –	

०				३				×			
नि	सां	नि	धम	—	ग	म	ध	नि	सां	सां	—
च	म	क	ता-	—	रि	के	—	त	म	में	—

२			
—	—	—	—
—	—	—	—

अंतरा

०				३				×			
ग	—	ग	ग	म	—	ध	—	नि	सां	—	सां
भू	—	ल	हु	ई	—	जो	—	उ	से	—	भू

२			
—	सां	सां	—
—	ल	जा	—

ध	रें	सां	रें	रेंनि	सां	नि	ध	म	म	ध	मध
शू	—	लों	—	में-	—	रे	—	सु	म	न	फू-

निसां	सां	नि	—
--	ल	जा	—

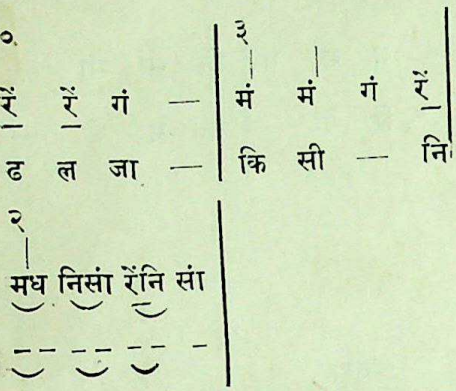

शेष अंतरे भी इसी प्रकार।

६. पद्मावती का गीत

जोगी-आसावरी—मिश्र ताल

—:०:—

स्थायी (दीपचंदी ताल)

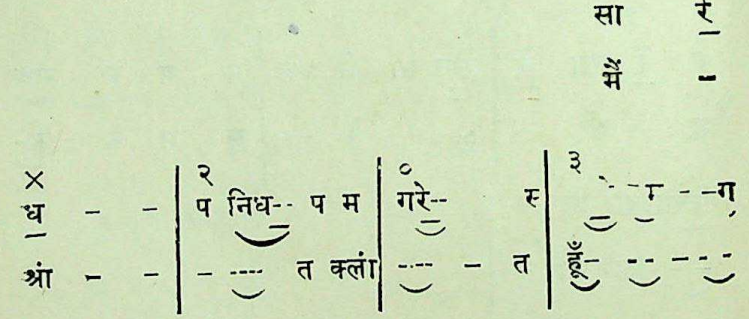

×	२	०	३
रे रे -	सा - - -	- - ❀	- - सा सा
व न -	में - - -	- - ❀	- - तु म

रे म -	प - ध प	- - -	- - प ध
छि पे -	हो - छ ली	- - -	- - म न

प ध नि -	ध - प -	ध म -	- ❀ सा रे
में- - -	- - - - -	- - -	- ❀ मैं -

अंतरा (तीन ताल, स्तब्ध)

प ध

वि ष

०	३	×	२
प ध सां सं	- सां सां सां	निसां रेंसां ध -	- ❀ प ध
वि र ह गी	- त त ज	दूँ- - - गी -	- ❀ वि ख

पध नि नि -	ध प ध म	मप ध प -	- ❀ सा म
रे- - आँ -	सू - गूँ -	थूँ- - गे-	- ❀ प्रि य

म म म – | रे म म म | प ध पध नि | – – प ध
त म के – | प्रे – म मि | ल न में – – | – – अ प

मप धप म ग | रे सा मपगम –ग | रे रे सा – | – ❀ सा रे
ने– ––ही – | भा – व··· – भ | व न में – | – ❀ मैं –

शेष अंतरे भी इसी प्रकार।

समाप्त